बी. एम. ए. कॉलेज बहेरी, दरभंगा (ल. ना. मि. वि.)
स्नातक (प्रथम खण्ड) - II
व्याख्यान का संक्षिप्त अंश
डॉ. सुभाषचन्द्र सिंह
दर्शनशास्त्र विभाग
दिनाँक - 22/09/2020

मिल का उपयोगितावाद

बेंथम की तरह मिल भी परार्थमूलक सुखवाद के समर्थक हैं। दोनों ही मानते हैं कि 'अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख' ही मानवजीवन का चरम लक्ष्य होना चाहिए। आनंद या सुख ही चरम लक्ष्य है, जिसकी प्राप्ति के लिए अन्य सभी वस्तुएँ- जैसे धन, स्वास्थ्य, सम्मान इत्यादि साधन हैं। इसलिए मिल के अनुसार उचित कार्य वह है, जिससे दुःख से अधिक सुख मिले और अनुचित कर्म वह है, जिससे सुख से अधिक दुःख मिले। इस प्रकार उचित सुख का कारण है और अनुचित दुःख का भी कारण कहा जा सकता है।

मिल का सुखवाद मनोवैज्ञानिक सुखवाद पर आधारित है। इनके अनुसार किसी वस्तु की इच्छा करना और उसे सुखप्रद पाना एक ही बात है। मनुष्य सदैव सुख की इच्छा करता है। अतः सुख ही वांछित है। इसका प्रमाण इस प्रकार दिया जाता है - कोई वस्तु दृश्य है, क्योंकि वह सुनाई पड़ती है। कोई वस्तु दृश्य है, क्योंकि वह दीख पड़ती है। इसी प्रकार कोई वस्तु वांछनीय है, क्योंकि लोग उसकी इच्छा करते हैं। इसलिए सुख भी वांछनीय है, क्योंकि सभी मनुष्य उसकी चाह रखते हैं।

बेंथम ने सुखों में केवल परिमाण का अंतर बताया था और गुण के दृष्टिकोण से सभी सुखों को बराबर माना था। किंतु मिल ने सुखों में गुणात्मक भेद भी स्वीकार किया है। सुखों को परिणाम और गुण दोनों दृष्टिकोण से देखना चाहिए।

बी. एम. ए. कॉलेज बहेरी, दरभंगा (एल.एन.एम.यू.)

स्नातक (प्रथम खण्ड) - I
व्याख्यान का संक्षिप्त अंश

डॉ. सुभाष चन्द्र सिंह
दर्शनशास्त्र विभाग
दिनांक - 22/09/2020

~~आच~~ आचरण तथा चरित्र का नैतिक महत्व :

आचरण और चरित्र दोनो नैतिक दृष्टिकोण से समान महत्व रखते है। चरित्र को व्यक्ति अपनी ऐच्छिक क्रियाओं द्वारा बनाता है। इसलिए इसे अर्जित कहते है। चरित्र का प्रकाशन आचरण से होता है। चरित्र आचरण का अदृश्य पहलू है और आचरण चरित्र का दृश्य पहलू। आचरण व्यक्ति का ऐच्छिक या अभ्यासजन्य कर्म है। यह व्यक्ति का सचेतन इच्छायुक्त कर्म है। यह 'इच्छा के अभ्यास' अर्थात चरित्र पर आश्रित है। आचरण तो मनुष्य के चरित्र की अभिव्यक्ति मात्र है। मनुष्य का जैसा चरित्र रहता है, वैसा ही उसका आचरण होता है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि चरित्र मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व से संबद्ध है, किन्तु आचरण उसके कर्म से संबद्ध है। दोनों में पारस्परिक निर्भरता का संबंध है। जेम्स सेठ के शब्दों में "व्यवहार या आचरण चरित्र का प्रकाशक है तथा चरित्र व्यक्तित्व का प्रकाशक। व्यक्ति का आचरण उसके चरित्र द्वारा निर्धारित होता है और उसका चरित्र आचरण द्वारा निर्धारित किया जा सकता है।

चरित्र सदैव उद्देश्य की स्थिरता की ओर संकेत करता है। चरित्र का अर्थ बदलता हुआ आचरण या उद्देश्य लेने पर नैतिक जिम्मेदारी का मूल आधार ही खत्म हो जाता है। जैसे- एक कुख्यात डाकू तर्क दे सकता है कि अब उसका पहले जैसा बुरा आचरण नही है, इसलिए वह दंड का भागी नही है। ऐसा मानने से तो नैतिकता का आधार ही समाप्त हो जाएगा इसलिए चरित्र को व्यक्तित्व का स्थायी रूप ही मानना उचित है।